International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-08-2024, Accepted: 12-09-2024, Published: 27-09-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 59-60

कनिः विखंडनवादी तेवर और समस्यात्मक क्वीर प्रतिनिधान

जयकृष्णन एम
शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, भारत

सारांश
प्रतिनिधान (representation) समाज और संस्कृति में प्रचलित "डोमिनेंटिंग" रंग, लिंग वर्ग, नस्ल, जाति आदि के आधिपत्य का खंडन करने में या "सुब्वेर्ट" (Subvert) करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रतिनिधान एक साहित्यिक मुद्दा के रूप में स्वीकृत होने के वर्षों पहले से भारतीय साहित्य में क्वीर प्रतिनिधान विद्यमान रहा है। क्वीर यानि लिंग पहचान या लैंगिकता से संबंधित पारंपरिक विचारों में फिट नहीं बैठने वाले लोग, सदियों से साहित्य का हिस्सा रहे हैं, चाहे उन रचनाओं के प्रतिनिधान की राजनितिक स्वर 21वीं सदी की क्वीर राजनीति से अलग हो। मलयालम साहित्य में क्वीर प्रतिनिधान वाली कहानियाँ कविता की तुलना से कम हैं। लेकिन हिंदी साहित्य से तुलना करने पर मलयालम की क्वीर कहानियाँ साहित्यिक और राजनैतिक दृष्टि से समृद्ध हैं। मलयालम लेखिका सी.एस चन्द्रिका की कहानी 'कनि' प्रासंगिक क्वीर मुद्दों को उकेरने वाली सशक्त कहानी है। साथ ही साथ प्रस्तुत कहानी स्त्रीवादी दृष्टिकोण से पारंपरिक विषमलैंगिक विवाह व्यवस्था के प्रति लेखिका का विद्रोह को भी रेखांकित करती है। यह शोध पत्र 'कनि' कहानी में अभिव्यक्त विखंडनवादी तेवर, क्वीर प्रतिनिधान, इसके समस्याग्रस्त पहलू आदि के अध्ययन–विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

मूल शब्दः कनि, सी. एस चन्द्रिका, विखंडनवाद, समलैंगिकता, क्वीर प्रतिनिधान, क्वीर, होमोसेक्सुअलिटी

भारतीय दंड संहिता की धारा 377 को समाप्त हुए छः वर्ष होने वाला है। समलैंगिकता को कानूनी मान्यता तो मिल गया लेकिन संघर्ष और स्वीकार्यता के लिए क्वीर समुदाय की लड़ाई जारी है। भारत में क्वीर साहित्य शैशवावस्था में है। भारत "सिस–हेटेरो" (cis hetero) केंद्रित है और साहित्यिक क्षेत्र पर "सिस–हेटेरो" (cis&hetero) साहित्य का प्रभुत्व है। इस प्रमुख आधिपत्य का प्रतिकार करने वाले LGBTQIA व्यक्तियों के साहित्य को क्वीर साहित्य की संज्ञा दी जाती है। लेकिन 2018 का ऐतिहासिक फैसले के पूर्व और उसके पश्चात समलैंगिक पात्रों का प्रतिनिधान करने वाली रचनाएँ गैर क्वीर लेखकों द्वारा प्रकाशित होती रही हैं। विजयकुमार कुनुश्शेरी, विजयाराजमल्लिका, विमिष मणियूर, कमला दास, इंदु मेनन जैसे मलयालम लेखक क्वीर–सम्बन्धी विषयों को साहित्य में उकेरने के लिया उल्लेखनीय हैं। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह क्वीर साहित्य के विषय में भी क्वीर लेखकों और गैर–क्वीर लेखकों की अभिव्यक्ति अलग हैं। मलयालम के प्रमुख लेखिका और एक्टिविस्ट सी.एस चन्द्रिका की 'कनि' एक गैर–क्वीर कहानीकार द्वारा लिखी गयी क्वीर कहानी है जिसमे एक "हेटेरोसेक्सुअल" (heterosexual) या विषमलैंगिक स्त्री की दृष्टि से समलैंगिक मुद्दों को अभिव्यक्त की हैं। इसके अतिरिक्त 'कनि' नायिका केन्द्रित होने के कारण स्त्रीवादी चेतना से भरी है और इस दृष्टि से भारत के पारंपरिक विषमलैंगिक विवाह व्यवस्था से शोषित स्त्री की छवि और इसके प्रति उसका विद्रोह को रेखांकित करती है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य 'कनि' में अभिव्यक्त नारीवादी चेतना और क्वीर आवाजों का अध्ययन–विश्लेषण करना है और इसमें उकेरा गया विखंडनवादी नारीवादी तेवर को रेखांकित करना है। कहानी का अध्ययन करने के लिए नारीवाद, विखंडनवाद क्वीर सिद्धांत सहित विभिन्न महत्वपूर्ण साहित्यिक सिद्धांतों का उपयोग किया गया है।

'कनि' में अभिव्यक्त विखंडनवादी तेवर

सी.एस चंद्रिका की कहानी 'कनि' क्वीर प्रतिनिधान और समलैंगिकता से संबंधित सामाजिक समस्याओं के अंकन की दृष्टि से सशक्त कहानी है। यह कहानी नायिका जयंती की दृष्टिकोण से बताई गयी है। घरवाले जयंती की शादी अभिजित नामक युवक से करवाते हैं। लेकिन अभिजित गे है और यह तथ्य जयंती को बहुत बाद में पता चलती है। इस वजह से उनकी शादीशुदा जिंदगी बिगड़ जाति है। वे दोनों परिवार और समाज को खुश करने के लिए 'एडजस्ट' करके अपना जीवन नहीं जीना चाहते, लेकिन उनके रिश्तेदार उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर करते हैं। परिवारवाले अभिजित की लैंगिकता को एक बीमारी के रूप में देखता है और वे इलाज करके उसे "सामान्य" बनाने का प्रयास करते हैं। जयंती तलाक चाहती है लेकिन उसके माता–पिता इसकी अनुमति नहीं देते हैं। कहानीकार के शब्दों में, "यह रिश्ता परिवार के गौरव की बात है। जयंती की भावनाएं इस गर्व की सीमा के अंदर नहीं आती हैं।" जयंती के माता– उसे बताते हैं कि सब ठीक हो जायेगा और वे उसे कुछ दिनों के लिए अलग कमरे में सोने की सलाह देती हैं। कहानी के अंत में, अभिजित के माता–पिता उको "ठीक" करने के लिए "शॉक थेरेपी" करवाने का निर्णय लेते हैं। चिकित्सा संस्थान का रिसेप्शनिस्ट अभिजीत के माता–पिता को बताता है, "बहुत से लोग ठीक हो जाते हैं और वापस लौट जाते हैं। लेकिन कभी–कभी, बस कभी–कभी, कुछ विफलताएँ होती हैं। उनका अभिविन्यास बदल जाता है, लेकिन वे नपुंसक हो जाते है।" जयंती उसे इस दुखद भाग्य से अभिजित को बचाने के लिए आत्महत्या कर लेती है आर इस दुखद खता से कहानी समाप्त होती है।

'कनि' में पारंपरिक भारतीय विवाह संस्था एवं संरचना को शोषण और विषमलैंगिक वर्चस्व का हथियार स्थापित किया जाता है। भारत में "अरेंज्ड मैरिज" पुरुष और स्त्री की बीच नहीं, बल्कि दो परिवारों के बीच होती हैं। भारत में विवाह तो पुरुष और स्त्री के बीच होता है। यह सिर्फ विशाम्लैंगिकता को मानता है, दूसरा कोई लिंग और लैंगिकता को यह स्थान नहीं हैं। घरवाले जानते थे कि अभिजित समलैंगिक है और वह एक स्त्री की साथ जी नहीं पाएंगे। लेकिन वे यह मानने को तैयार नहीं होते। आखिर, समाज क्या कहेंगे अगर परिवार के एकलौता पुरुष संतान अविवाहित रह जाएगा? भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने समान लिंग के व्यक्तियों के बीच विवाह को कानूनी मान्यता देने से इनकार कर दिया है और लोग भी क्या सोचेंगे। जयंती भी ऐसी

रूढ़िवादी व्यवस्था का शिकार है। परिवारवालों ने अभिजित से उसकी शादी करवाई सिर्फ इसलिए कि उसका परिवार संपन्न एवं समाज में सम्मानित है। अभिजित और जयंती एक दुसरे को पसंद करे या न करे, बस परिवार का नाम रोशन हो जाए। जब जयंती अभिजित कि लैंगिकता का पर्दाफाश होने पर तलाक चाहती है तो उसकी माँ कहती है कि थोडा दिन "एडजस्ट" करले वर्ना परिवार की इज्ज़त मिटटी में मिल जाएगी। अभिजित और जयंती दोनों इस प्रेमहीन विवाह में घुट रहे हैं। अभिजित और जयंती को अपने परिवार का सम्मान बनाए रखने के लिए अपनी खुशियाँ और जीवन का त्याग करना पड़ता हैं। इन सब के बीच, परिवारवालों का मानना हैं कि "शॉक थेरेपी" सड़े अभिजित को "ठीक" किया जा सकता है। इसका परिणाम यह होगा कि अभिजित नपुंसक बन जाएगा लेकिन उन्हें कोई परवाह नहीं। बस, समाज के सामने अभिजित और जयंत एक खुश्किस्मद पति–पत्नी लगे, बस। यहाँ, लेखिका धार्मिक दल द्वारा संचालित चिकित्सा संस्थानों में की जाने वाली "कन्वर्शन थेरेपी" के खतरों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है।

कहानी के अंत में जयंती का आत्महत्या करना उसकी हार का प्रतीक नहीं है बल्कि यह विद्रोह प्रतिरोध का प्रतीक है। पितृसत्तात्मक "सिस हेटेरो" समाज ने स्त्री–पुरुष संबंधों को आदर्श खोषित करके प्रेम को परिभाषित किया है और यह विचारधारा गैर विषमलैंगिक संबंधों को हाशिए पर डाल दिए हैं। अभिजित और जयंती के परिवार की दृष्टि में विषमलैंगिक विवाह ही मानक हैं और विवाह का अंतिम लक्ष्य प्रजनन है। जयंती और अभिजित के लिए इस तरह जीना असहनीय हैं। जयंती रूढ़िवादी विवाह व्यवस्था का शिकार है लेकिन वह अभिजित के संघर्षों को पहचानती है और उसकी लैंगिक अभिविन्यास को मानती है। अभिजित जयंती से कभी प्यार नहीं कर सकूंगा और जयंती भारतीय समाज की एक और "ट्रैजिक हीरोइन" बनना नहीं चाहती। उन दोनों को पता हैं कि परिवारवालों के दबाव के सामने वे टिक नहीं पाएंगे। जयंती के लिए इस अत्याचार से अभिजित को बचने और स्वयं मुक्ति पाने का एकमात्र रास्ता मृत्यु है। एक असफल विवाह का शिकार होने के बजाय, जयंती एक स्वतंत्र स्त्री के रूप में, अपनी शर्तों पर अपना जीवन समाप्त करती है। हालांकि इस तरह का राजनीतिक बयान विवादास्पद है, लेखिका जयंती की आत्महत्या को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लैंगिक पहचान को मान्यता नहीं देने वाला पितृसत्तात्मक विषमलैंगिक समाज के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में अभिव्यक्त करती है। जयंती ने परिवार और समाज को खुश करने के लिए झूठी जिंदगी जीने की बजाय मौत को चुना। चंद्रिका ने यौन राजनीति और मानवीय मूल्यों पर जोर देकर विवाह की विषम–पितृसत्तात्मक संस्था का प्रतिबधता से खंडन किया है।

इस सशक्त कहानी के माध्यम से, कहानीकार ने व्यवस्थित विवाह की भारतीय अवधारणा, 'कमिंग आउट' की समस्या, भारतीय चिकित्सा विज्ञान में समलैंगिकता की समस्या, नायक और नायिका– दोनों के आंतरिक संघर्ष, जैसे अनेक प्रासंगिक विषयों पर चर्चा की है। स

समस्यात्मक समलैंगिकता

क्वीर सिद्धांत की दृष्टि से 'कनि' के द्वारा व्यक्त किए गए क्वीर राजनीति अतिसरलीकृत है। उपेक्षित पत्नी और "पुन्सत्वीन" समलैंगिक पति की छवि वर्षों से साहित्यिक जगत में प्रचलित रही हैं। इस तरह के वृत्तान्त में विषमलैंगिक स्त्री को पीडित व्यक्ति के रूप में और उकेरा गया हैं। रश्मि शर्मा की कहानी 'बंद कोठरी का दरवाज़ा', सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों है', रीता दास राम की कहानी 'शादी की आठवीं रात', शिवानी का उपन्यास 'शमशान चंपा' और 2023 में रिलीज़ हुई बहुचर्चित मलयालम फिल्म 'कातल दी कोर' इसी "लापरवाह समलैंगिक पति" समस्या पर केन्द्रित हैं। फर्क इतना है कि 'कनि' समलैंगिक व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति (sympathy) से भरी है, जबकि क्वीर समुदाय को समानुभूति (empathy) की ज्यादा ज़रुरत है। चन्द्रिका अभिजित और जयंती दोनों के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है और यह बताने की कोशिश करती है कि जो कुछ रो रहा है, इस सब का ज़िम्मेदार उनके परिवार वाले हैं। लेकिन इस प्रयास में लेखिका कुछ हद तक असफल होती है। 'कनि' के अंत में जयंती अभिजित को शॉक थेरेपी से बचने के लिए अपना जीवन बलिदान कर देती है। अभिजित अपने आप को और जयंती को बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर पाता। वह अपने परिवार वालों के हाथ का खिलौना मात्र है। जयंती का अपना जीवन बलिदान करने का फैसला अभिजित को और कमज़ोर बना देता है। अन्य कहानियों के तरह 'कनि' भी जाने–अनजाने पत्नी की उपकेशा के लिए समलैंगिक व्यक्ति को दोषी ठहरता है। परिणामस्वरूप अभिजित और जयंती कहीं कहीं "कार्डबोर्ड कटआउट" मात्र रह जाते हैं।

उपसंहार

'कनि' कहानी का मूल्यांकन किसी एक एक दृष्टिकोण या सिद्धांत को लेकर नहीं किया जा सकता। स्पष्ट रूप से 'कनि' एक बहुआयामी कहानी है। प्रस्तुत कहानी के द्वारा चन्द्रिका जी ने अपनी नारीवादी दृष्टिकोण, पारंपरिक विवाह व्यवस्था के प्रति विरोध एवं प्रासंगिक समलैंगिक मुद्दों को भी उजागर किये हैं। लेकिन एक छोटी कहानी के अन्दर इतने सारे महत्वपूर्ण पहलुओं को समेटना कोई आसन काम नहीं है आर इस दृष्टि से 'कनि' में कई दोष भी हैं। 'कनि' को समलैंगिक कहानी के रूप में मार्किट किया गया है लेकिन यह मुख्य रूप से जयंती की कहानी है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री को अपने पैर तले रखने के लिए कैसे अरेंज्ड शादी को कैसे हेरफेर करता है। जयंती इस व्यवस्था का शिकार हो जाती है, लेकिन वह परिवार का सम्मान और इज्जत का गुलाम बनना नहीं चाहती और यह बिलकुल नहीं चाहती अभिजित को कुछ हो जाए। इसलिए वह मौत चुनती है। मृत्यु जयंती के लिए पलायन नहीं बल्कि प्रतिरोध है। इस नैरेटिव का परिणाम यह हुआ कि कहानीकार अभिजित के चरित्र को उकेरने में सफल नहीं हुई है। ऐसा लगता है मानो अभिजित का कहानी में कोई अस्तित्व ही नहीं है। प्रस्तुत कहानी में यहीं–कहीं क्वीर समुदाय के प्रति कहानीकार का सामाजिक प्रतिबधता तो दिखाई देता है और कहानीकार हेटेरो–बाइनरी समाज व्यवस्था और धार्मिक संस्थाओं का कट्टु आलोचना करती तो है। लेकिन 'कनि' में अभिव्यक्त समलैंगिक संवेदना और प्रतिनिधान अक्सर स्टीरियोटिपिकल लगते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. रेश्मी, जी., – अनिलकुमार, के. एस. (सं). (2020). कनिः मलयालत्तिले गे कथकल. तिरुवनन्तपुरमः चिंता पब्लिशर्स.
2. वनजा, के. (2021). क्वीर विमर्शः लेस्बियन, गे, बाई–सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर. नयी दिल्लीः वाणी प्रकाशन.
3. वनिता, रूथ., – किदवई, सलीम. (2008). सेम–सेक्स लव इन इंडियाः ए लिटरेरी हिस्ट्री. हरयाणाः पेंगुइन रैंडम हाउस.
4. वनिता, रूथ. (सं). (2002). क्वीरिंग इंडिया. न्यू यॉर्कः रौतलेज.
5. हेलबेरस्टाम, जे, जाक. (2005). इन ए क्वीर टाइम एंड प्लेज. एन वाई यूं प्रेस.
6. फूको, एम (1978). दी हिस्ट्री ऑफ़ सेक्सुअलिटी. न्यू यॉर्करू विंटेज.
7. राव, र. (2017). क्रिमिनल लवरू क्वीर थ्योरी, कल्चर एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया. न्यू यॉर्कः सेज पब्लिकेशनस